जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

निर्भयता सत्य के आधार पर आती है कल्पना के आधार पर नहीं। - बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-29

वर्ष : 25, अंक: 8 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (द्वितीय) 2002 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. अनुभवप्रकाश जैन एवं पं. संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

कहान सन्देश

मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान

(सम्यग्दर्शन पुस्तक के आधार से)

(104 वीं किस्त)

(गतांक से आगे .....)

मोक्षार्थी का मुक्त होने का उल्लास

भवभ्रमण से छूटने के लिये यदि कुछ करने योग्य है तो मात्र यह निश्चय ही करने योग्य है कि 'मैं परका कर्ता नहीं हूँ, मात्र ज्ञाता ही हूँ' तथा आत्मा मन-वाणी-देह तथा पुण्य-पाप के विकल्प से रहित है। ऐसी श्रद्धा ही समकित है और यही मुक्तिमार्ग का प्रथम सोपान है। मोक्षार्थी को मुक्ति का उल्लास होता है; क्योंकि उसे आत्मस्वभाव को साधकर अल्पकाल में संसार से मुक्त होकर सिद्ध होना है।

परमात्मप्रकाश में पशु का उदाहरण देकर कहा है कि ह्न यदि बन्धन से मुक्त होने में उत्तम सुख न होता तो पशु भी बन्धन से छूटने की इच्छा क्यों करता ? अहो ! छूटने के लिये पशु का बच्चा भी उत्साह से उछलता है। क्या हम उस पशु के बच्चों से भी गये-बीते हैं, जो संसार बन्धन में बंधे ही अपने को सुखी मानते है और छूटने का प्रयास भी नहीं करते।

भाई ! मनुष्यभव में इस जिनधर्म के सत्समागम में जिनवाणी सुनने की पात्रता पाकर भी यदि हम ये अवसर चूक गये तो फिर अनन्त भव इसी चौरासी के चक्कर में पड़े रहेंगे। जिसे अन्तर में सत् समझने का उल्लास है, उसे निश्चित ही अल्पकाल में मुक्ति हुए बिना नहीं रहे। यह परम उत्कृष्ट बात हमें हमारे महाभाग्य से सुनने को सहज ही मिल गई है, अत: किसी भी परिस्थिति में यह अवसर चूकने योग्य नहीं है।

स्वामी कार्तिकेय ने कार्तिकेयानुप्रेक्षा में संसार भ्रमण का कारण एवं उससे छूटने के उपाय की चर्चा करते हुए कहा है ह्न

एवं अणाइकाले पंचपयारे भमेइ संसारे।
णाणादुक्खणिहाणो, जीवो मिच्छत्त-दोसेण ।।72।।
इय संसारं जाणिय मोहं सव्वायरेण चइऊण ।
तं झायह स-सरूवं, संसरणं जेण णासेइ ।।73।।

इसप्रकार अनादिकाल से यह जीव मिथ्यात्व के कारण पांच परावर्तन रूप भ्रमण करता हुआ नाना प्रकार से अनन्त दु:ख भोगता रहा है।

इस प्रकार के संसार के दु:खद स्वरूप को जानकर हे भव्य जीवों ! सर्वप्रकार से उद्यमपूर्वक मोह को छोड़कर मिथ्या मान्यताओं का त्यागकर वस्तुस्वरूप की सच्ची समझ पूर्वक आत्मा के स्वभाव की आराधना करो। **(क्रमश:)**

सम्पादकीय -

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन

10

- रतनचन्द भारिल्ल

चौदह रत्नों और नौ निधियों से युक्त अतिशयबुद्धिमान चक्रवर्ती भरत षट्खण्ड पृथ्वी का उपभोग करने लगे।

यद्यपि सम्राट भरत क्षायिक सम्यग्दृष्टि थे, फिर भी उन्हें अपने लघुभ्राता बाहुबली पर ऐसा क्रोध आया कि उनपर प्राणघातक सुदर्शनचक्र चला दिया; इस कथन से हमें चतुर्थगुणस्थान की निम्नतम भूमिका का ज्ञान होता है; परन्तु यह कोई आदर्श नहीं है; अत: इस घटना विशेष का अवलम्बन लेकर स्वच्छन्द होना भी उचित नहीं है और चतुर्थ गुणस्थान वाले जीवों से बहुत ऊँचे आचरण की अपेक्षा रखना भी योग्य नहीं है।

गोम्मटसार जैसे करणानुयोग के ग्रन्थ में चतुर्थ गुणस्थानवाले जीव की पात्रता का ज्ञान कराते हुए लिखा है कि -

णो इंदियेसु विरदो, णो जीवे थावरे तसे वापि ।
जो सद्दहदि जिणुत्तं सम्माइट्ठी अविरदो सो ।।

जो अभी न तो इन्द्रियों के विषयों से विरक्त हैं और न त्रसस्थावर हिंसा से भी विरक्त हैं। मात्र जिनोक्त तत्त्वादि एवं स्वसंचालित विश्वव्यवस्था में विश्वास करता है श्रद्धान करता है। इस दृष्टि से भरतजी को यदि क्रोधावेश में चक्र चल गया तो इसकारण उनके सम्यग्दर्शन पर प्रश्न नहीं लगाया जा सकता।

तदनन्तर भरतजी दयावान होकर बिना किसी परीक्षा के बारह वर्ष तक प्रजा के लिए मनचाहा दान देते रहे। जिनशासन सम्बन्धी वात्सल्य और भक्ति भाव के वशीभूत होकर उन्होंने अन्न तथा धान्य आदि अंकुरो से श्रावक की परीक्षा की। काकणी रत्न से निर्मित रत्नत्रय सूत्र को उनका चिन्ह बनाया गया और आदर सत्कार कर कृत युग में उन्हें भक्तिपूर्वक धन दिया। आगे चलकर भरत के द्वारा आदर प्राप्त हुए वे लोग ब्राह्मण कहे जाने लगे। इसतरह पहले कहे हुए तीन वर्णों के साथ मिलकर अब ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र - ये चार वर्ण हो गये। चक्रवर्ती के चक्र, छत्र, खड्ग, दण्ड, काकिणी, मणि, चर्मम् (ढ़ाल), सेनापति, गृहपति, हस्ती, अश्व, पुरोहित, स्थपति और स्त्री - ये चौदह रत्न होते हैं। प्रत्येक रत्न की एक-एक हजार देव रक्षा करते हैं।

काल, महाकाल, पाण्डुक, भाणव, नै:सर्प, सर्वरत्न, शंख, पद्म और पिंगल - ये नौ निधी यह भी चक्रवर्ती के होती हैं। ये सभी निधियां अविनाशी थी; निधिपाल नामक देवों के द्वारा सुरक्षित थी और निरन्तर लोगों के उपकार में काम आती थीं। ये आठ-आठ पहियों वाली गाड़ी के आकार की थीं।

प्रत्येक की एक-एक हजार यक्ष निरन्तर देख-रेख रखते थे। **(क्रमश:)**

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मु
सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर द्वारा रजत जयन्ती वर्ष में

पच्चीसवाँ आध्यात्मि

रविवार, दिनांक 4 अगस्त से मंगलव

आमंत्रण

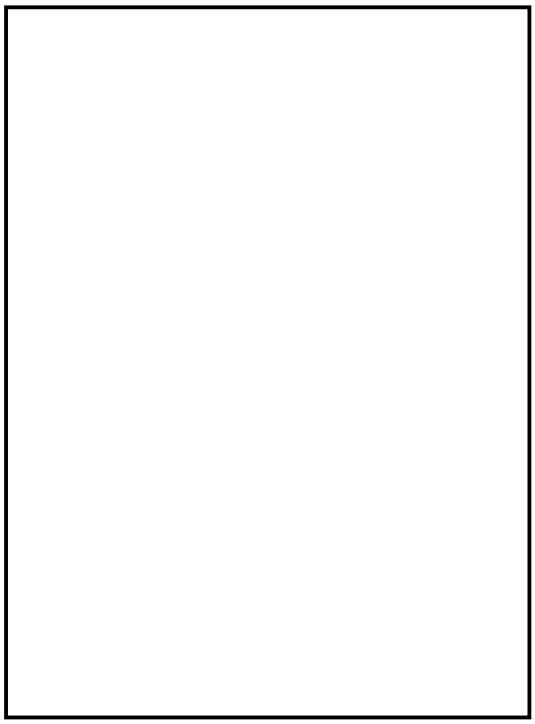

परमपूज्य आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव

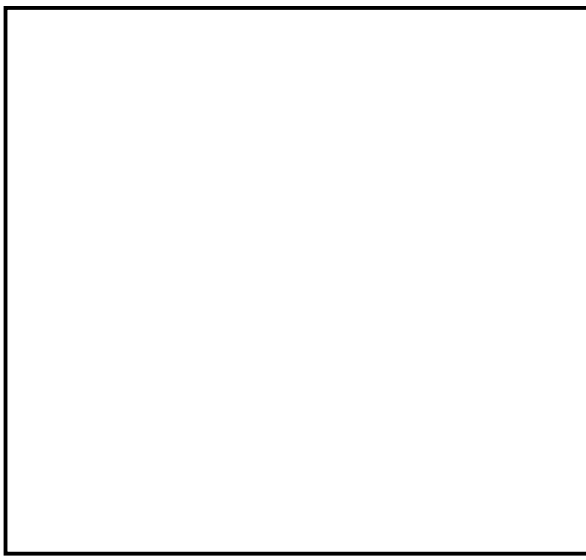

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जय

आदरणीय धर्मप्रेमी बन्धुवर,

यह सूचित करते हुये अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित श्र गुलाबीनगरी, जयपुर स्थित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में रविवार, दिनांक 4 अगस्त से मंगलवार, 13 अगस्त 2

इस शिविर में अध्यात्म जगत के प्रसिद्ध प्रवक्ता *बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जय जैन आगरा, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित अनुभवप्रकाशजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गो* विद्वानों का प्रवचन, कक्षाओं एवं तत्त्वचर्चा के माध्यम से लाभ मिलेगा। साथ ही व्याख्यानमाला के माध्यम से अन्य अनेक

शिविर के सभी कार्य पण्डित ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित ब्र. धन्य

इस अवसर पर गणमान्य श्रेष्ठी सर्वश्री **मुम्बई से –** सौभागमल पाटनी, मुकुन्दभाई खारा, कांतीभाई मोटाणी, प्रवीण बालचन्द पाटनी, कीर्तिभाई सेठ, **इन्दौर से –** मनोहरलाल काला, अशोककुमार बडजात्या, मांगीलाल पहाडिया, **कोटा से –** जैन, आदीशकुमार जैन, **कानपुर से –** राजूभाई जैन, प्रसन्नकुमार जैन, **रतलाम से –** झमकलाल कांतीलाल बड़जात्या, **लोहा से –** अशोककुमार जैन सुभाष ट्रांसपोट, रतनलाल सौगानी, देवेन्द्रकुमार बडकुल, **सागर से –** सेठ गुलाबचन्द जैन सुभाष

म्बई द्वारा संस्थापित तथा संचालित श्री टोडरमल दि. जैन
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में आयोजित

मेक शिक्षण-शिविर

वार, दिनांक 13 अगस्त, 2002 तक

— पत्रिका

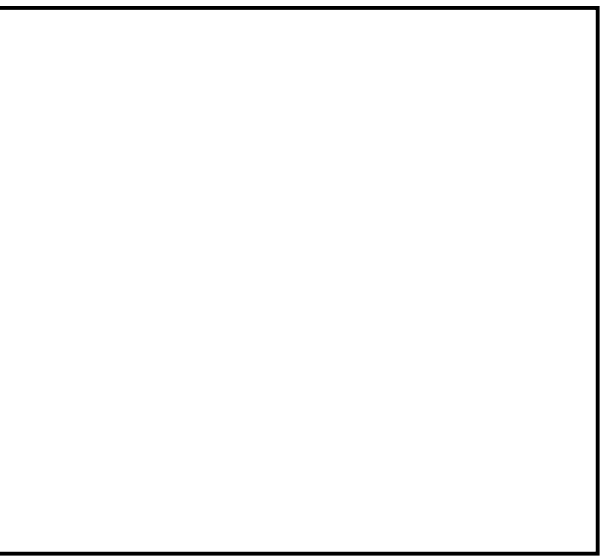

पुर स्थित त्रिमूर्ति जिनमंदिर

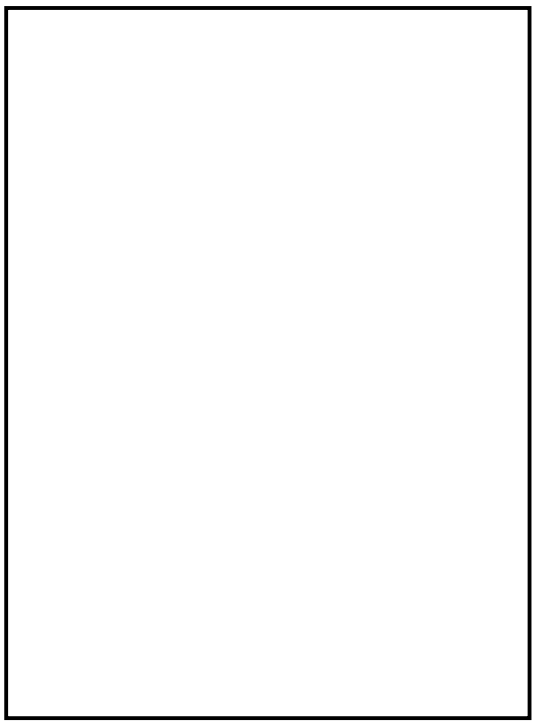

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी

ी कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस रजत जयन्ती वर्ष में राजस्थान की प्रसिद्ध 002 तक 25वें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन अनेक विशिष्ट मांगलिक कार्यक्रमों सहित किया जा रहा है। *पुर, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. यशपालजी जैन बेलगाँव, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी धा जयपुर, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री छतरपुर, पण्डित दिनेशभाई शाह मुम्बई, डॉ. उज्ज्वला शाह मुम्बई* आदि अनेक क विशिष्ट विद्वानों द्वारा विविध विषयों के व्याख्यानों का लाभ भी प्राप्त होगा।

कुमारजी बेलोकर गजपंथा, श्री सुमनभाई दोशी राजकोट एवं श्री अमृतभाई मेहता फतेपुर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

भाई बोरा, डॉ. सुभाष चांदीवाल, कमलकुमार बडजात्या, कैलाशचंद छाबड़ा, शांतिलाल रिखबदास जैन, **कलकत्ता से –** – प्रेमचन्द बजाज, ज्ञानचन्द जैन, गंभीरमल जैन, **दिल्ली से –** विमलकुमार जैन नीरू केमिकल्स, अजितप्रसाद जैन, पृथ्वीचन्द **रदा से –** माणकचन्द पाटोदी, **हिंगोली से –** रेणुकादास दोडल, **जबलपुर से –** नेमिचन्द पायलवाले, प्रसन्नकुमार जैन, **भोपाल** ट्रांसपोट, अभयकुमार जैन, कृष्णचन्द जैन, **उदयपुर से –** भागचन्द कालिका, लक्ष्मीलाल बंडी, ताराचन्द जैन, **भीलवाड़ा**

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 50

गतांक से आगे

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

इस गाथा का अर्थ करने में कई विद्वान भ्रमित हो जाते हैं। वे कहते हैं कि आचार्यों ने कहा है कि हम अपने आत्मा को शुद्ध मानें। वास्तव में तो आत्मा शुद्ध नहीं है, अशुद्ध ही है; लेकिन आत्मा को शुद्ध मानने से आत्मा शुद्ध हो जाएगा; इसलिए आचार्यदेव आत्मा को शुद्ध मानने का आग्रह कर रहे हैं।

इससे यह अर्थ प्रतिभासित होता है कि आत्मा अशुद्ध है और हमें उसे शुद्ध मानना है। इसका आशय तो यह हुआ कि आत्मा शुद्ध है – यह बात असत्य है और इस असत्य कथन के आश्रय से शुद्धता प्रगट होती है। इसमें यह स्वीकार है कि हम अशुद्ध है और अशुद्ध को अशुद्ध मानने से हमारी अशुद्धता प्रगट हुई; यह कथन सत्य है। इसप्रकार हमें सत्य कथन के आश्रय से अशुद्धता और असत्य कथन के आश्रय से शुद्धता प्रगट होना मानना होगा।

द्रव्यदृष्टि से यह शुद्ध है एवं पर्यायदृष्टि से यह अशुद्ध है – यह जैनदर्शन का अनेकांत है। द्रव्यदृष्टि अर्थात् पर्यायों को गौण करके अकेले आत्मा के द्रव्यस्वभाव की तरफ से देखें तो आत्मा शुद्ध दृष्टिगोचर होता है; जबकि पर्यायदृष्टि में द्रव्य की शुद्धता को गौण करके पर्यायों की तरफ देखें तो पर्यायों में जो अशुद्धि है, वही दिखाई देती है। इसप्रकार द्रव्य में शुद्धि है; अतः आत्मा शुद्ध है एवं पर्याय में अशुद्धि है; अतः आत्मा अशुद्ध है – इसप्रकार दोनों ही कथन उचित हैं।

इसपर वे विद्वान कहते हैं कि जो अपने को शुद्ध मानता है, शुद्ध ध्याता है; इससे यह अर्थ प्रतिभासित होता है कि पर्याय में अशुद्धता है; अतः कथंचित् शुद्ध है। इसप्रकार 'मैं शुद्धाशुद्ध हूँ' ऐसा मानने से धर्म होना चाहिए; जबकि यह सत्य नहीं है।

'मैं शुद्ध हूँ' – ऐसा स्वीकार कराके आचार्य, पर्याय में जो अशुद्धि है, जिसमें यह जीव अपनापन करता है, उसे तोड़ना चाहते हैं तथा द्रव्य में जो शुद्धि है, उससे इस जीव का अपनापन जोड़ना चाहते हैं, इसप्रकार आचार्य पर्याय का निषेध नहीं कर रहे हैं; अपितु पर्यायों में जो अशुद्धि है, उसमें इस जीव का जो अपनत्व है, उसका निषेध कर रहे हैं। इस जीव की भूल के कारण ही पर्यायों में अशुद्धि है। ज्ञानी जीव भूल को स्वीकार करता है; लेकिन 'मैं भूल हूँ' – ऐसा स्वीकार नहीं करता। यदि मैं भूलस्वरूप हो गया तब तो भूल इस जीव का स्वभाव हो जायेगी; वस्तुस्वरूप हो जायेगी। ज्ञानी यह स्वीकार करता है कि भूल में मेरा अपनापन नहीं है। ये जो शुद्धस्वभाव है, वही मैं हूँ, ज्ञानी इसी का ध्यान करता है; तब स्वयमेव ही पर्याय की भूल निकल जाती है एवं जो दूसरी नूतन पर्याय उत्पन्न होती है, वह शुद्ध माननेरूप शुद्धपर्याय ही उत्पन्न होती है।

इसप्रकार इस आत्मा में माननेरूप श्रद्धागुण में शुद्धता, जाननेरूप ज्ञानगुण में शुद्धता, ध्यान अर्थात् चारित्रगुण की शुद्ध पर्याय उत्पन्न होती है। यह तभी संभव है कि जब यह आत्मा 'मैं शुद्ध हूँ' – ऐसा स्वीकार करे। इस गाथा का हिन्दी पद्यानुवाद इस अर्थ को और अधिक सरलता से स्पष्ट करता है –

(हरिगीत)

जो जानता मैं शुद्ध हूँ, वह शुद्धता का प्राप्त हो।
जो जानता अविशुद्ध वह, अविशुद्धता को प्राप्त हो।।186।।

इसमें जो 'मैं शुद्ध हूँ' – ऐसा मानता है, वह शुद्धता को प्राप्त होता है तथा जो स्वयं को अशुद्ध मानता है वह अशुद्धता को प्राप्त होता है – यह नियम है।

समयसार में इस नियम के समर्थन में एक और तर्क प्रस्तुत किया गया है; वह यह है कि 'मैं शुद्ध हूँ' यह जो ज्ञान हुआ है, यदि यह धारावाही हो जाए; अर्थात् उस ज्ञान में निरन्तरता रहे, तो वह ध्यान हो जाता है। इसे स्पष्ट करनेवाला कलश इसप्रकार है –

(मालिनी)

यदि कथमपि धारावाहिना बोधनेन,
ध्रुवमुपलभमानः शुद्धमात्मानमास्ते।
तदयमुदयदात्मारामरामात्मानमात्मा;
परपरिणतिरोधाच्छुद्धमेवाभ्युपैति ।।127।।

(रोला)

भेदज्ञान के इस अविरल धारा प्रवाह से।
कैसे भी कर प्राप्त करे जो शुद्धातम को।।
और निरंतर उसमें ही थिर होता जावे।
पर परिणति को त्याग निरंतर शुद्ध हो जावे।।127।।

इस शुद्धात्मा को किसी भी प्रकार से धारावाही ज्ञान से प्राप्त करें; एक प्रकार से इसी का नाम ध्यान है। ध्यान तो चारित्रगुण की निर्मल पर्याय का नाम है; जब धारावाहीरूप से होनेवाले ज्ञान के कारण राग के अभावरूप, कषाय के अभावरूप जो निर्मल परिणति उत्पन्न होती है, वही चारित्रगुण की निर्मल पर्याय कहलाती है। वीतरागतारूप शुद्धि को छोड़कर जो मात्र ज्ञान की निरन्तरता है, वही धारावाही ज्ञान है।

'मैं शुद्ध हूँ, मैं शुद्ध हूँ' ये ज्ञान जब धारावाही बना रहे; तब इस जीव की अशुद्ध पर्याय का व्यय हो जाता है और इसके पश्चात् जो पर्याय उत्पन्न होती है; वह 'मैं ज्ञान हूँ, मैं शुद्ध हूँ' – इसप्रकार शुद्धतारूप ही उत्पन्न होती है।

'मैं शुद्ध हूँ, मैं शुद्ध हूँ' – इसप्रकार के विकल्पों में धारावाही ज्ञान नहीं होता, धारावाहीपना वाणी और विकल्प में कायम नहीं रह सकता है। 'मैं शुद्ध हूँ' इस ज्ञान का धारावाहीपना ज्ञान में है, वाणी और विकल्प में नहीं; ज्ञान धारावाहीपने से आत्मा की शुद्धता

को ही जानता रहे; यही शुद्धनय का उदय है। शुद्धनय का उदय अर्थात् मुख्यता शुद्धनय की रहे एवं अन्य नयों की गौणता रहें; इसे धारावाहीबोध कहते हैं – तात्पर्य यह है कि त्रिकालीध्रुव आत्मा ज्ञानी का ज्ञेय बना रहे। ऐसा धारावाहीबोध यदि अंतर्मुहूर्त तक बना रहे तो केवलज्ञान हो जाता है। इसप्रकार धारावाहीपने का एक अर्थ तो यह है।

धारावाहीपने का एक दूसरा भी अर्थ होता है। वह यह है कि ज्ञान में एक बार यह दृढ़ निर्णय हो गया है कि 'मैं शुद्ध हूँ।' इसके पश्चात् यदि यह जीव सांसारिक प्रवृत्तियों में भी संलग्न रहें; तब भी वह यही जानता है कि जो कुछ हो रहा है, वह है जरूर; लेकिन वह मैं नहीं हूँ, मैं तो शुद्ध हूँ; यह निर्णय इस जीव के लब्धिज्ञान में, धारणाज्ञान में सुरक्षित है। जो अंतर में धारावाहीरूप से ज्ञान की धारा है, उसे ही लब्धिज्ञान कहा जाता है।

इस ज्ञानधारा को पण्डित बनारसीदासजी पुण्य–पाप एकत्व द्वार में इसप्रकार स्पष्ट करते हैं –

जौलौं अष्ट कर्म कौ विनास नांही सरवथा,
तौलौं अंतरातमा मैं धारा दोइ बरनी।
एक ग्यानधारा एक सुभासुभ कर्मधारा,
दुहूं की प्रकृति न्यारी–न्यारी न्यारी धरनी।।
इतनौ विसेस जु करमधारा बंधरूप,
पराधीन सकति विविध बंध करनी।
ग्यानधारा मोखरूप मोख की करनहार,
दोख की हरनहार भौ–समुद्र–तरनी।।14।।

अंतरात्मा में ज्ञानधारा एवं शुभाशुभकर्मधारा दोनों निरंतर एकसाथ बहती रहती है। शुभाशुभकर्मधारा शुद्धोपयोग के काल में भी बहती है। जब शुभाशुभकर्मधारा बहती है तब ज्ञानधारा टूटती नहीं है; वह लब्धिज्ञान में रहती है। यही धारावाही ज्ञान है। इस धारावाही ज्ञान में वह तेजी नहीं होती है, जैसी तेजी धारावाहीबोध अर्थात् शुद्धोपयोग में होती है। शुद्धोपयोगरूप धारावाहीबोध की अंतर्मुहूर्त तक कि निरंतरता से केवलज्ञान होता है। प्रस्तुत धारावाही ज्ञान उक्त धारावाहीबोध जैसा नहीं है; लेकिन इस धारावाहीज्ञान से कुछ कार्य नहीं होता है – ऐसा भी नहीं है। इस धारा के बहाव के कारण ही 43 प्रकृतियों का बंध नहीं होता है। वह 43 प्रकृतियाँ उदय में आकर खिरती रहती हैं। इसप्रकार आत्मा उतनी मात्रा में निर्बंध होता है, उतनी अशुद्धि की हानि होती है एवं उतनी शुद्धि की वृद्धि होती है; इसी का नाम निर्जरा है – ऐसे ही शनैः शनैः मोक्ष हो जाता है।

इसे हम इस उदाहरण से समझ सकते हैं। लोक में भी ऐसा पाया जाता है कि जो पुरुष है, वह निरंतर 'मैं स्त्री हूँ – ऐसा ही चिंतन करता रहे तो वह अर्द्धस्त्री तो हो ही जाता है। डॉक्टर तो यहाँ तक कहते हैं कि ऐसे पुरुष के हारमोनों में परिवर्तन होने लगता है एवं वह धीरे–धीरे स्त्री जैसा हो जाता है।

सबके शरीर में स्त्रीत्व एवं पुरुषत्व दोनों के तत्त्व विद्यमान है। स्त्रियों में पुरुषों के एवं पुरुषों में स्त्रियों के सम्पूर्ण तत्त्व विद्यमान है। मात्र अंतर यह है कि पुरुषों में पुरुषत्व अधिक है एवं स्त्रीत्व कम; जबकि स्त्रियों में स्त्रीत्व अधिक है एवं पुरुषत्व कम। पुरुषों में जो पुरुषत्व अधिक होता है, उससे उन तत्त्वों को ही उत्तेजना मिलती रहती है; इसलिए वे ही तत्त्व पनपते एवं वृद्धि को प्राप्त होते हैं; अतः उनमें 'मैं स्त्री हूँ' – ऐसी मान्यता नहीं पायी जाती है। इसकारण उस पुरुष के स्त्री तत्व सुप्त रहते हैं, वह पुरुषत्व के ही वातावरण में अधिक रहता है, जिससे उस पुरुष में 'मैं स्त्री हूँ' – ऐसी मान्यता नहीं पायी जाती।

अब वह पुरुष यदि स्त्रियों जैसे वस्त्र धारण करने लगे, स्त्रियों जैसी केश–सज्जा करे, स्त्रियों जैसा ही चिन्तन करने लगे; तब शनैः शनैः उन स्त्री परिणामों को शक्ति मिलती है, स्त्री हारमोनों को शक्ति मिलती है; तब वे स्त्रीतत्त्व तेजी से काम करने लगते हैं, और पुरुष के पुरुषतत्त्व सुप्त हो जाते हैं, तब उस पुरुष को 'मैं स्त्री हूँ' – ऐसा अनुभव होने लगता है। वह डॉक्टरों से शिकायत करता है तो डॉक्टर उसका ऑपरेशन करके लिंग परिवर्तन कर देते हैं; इसप्रकार लोक में भी यह अनुभव से सिद्ध हो रहा है।

जैसा हम सोचते हैं, वैसे ही हम हो जाते हैं; – यही सूत्र समयसार के इस कलश में बताया है। इसे अधिक सरलता से समझने के लिए समयसार कलश का यह पद्यानुवाद उपयुक्त है –

(रोला)

भेदज्ञान के इस अविरल धाराप्रवाह से,
कैसे भी कर प्राप्त करे जो शुद्धातम को।
और निरंतर उसमें ही थिर होता जावे,
पर परिणति को त्याग निरंतर शुद्ध हो जावे।।127।।

आत्मा में निरंतर भेदविज्ञान की धारा बहनी चाहिए। यह धारा प्रथमतः 'मैं भिन्न हूँ, देह भिन्न है' – इसप्रकार भाषा में बहेगी; तदुपरांत यह धारा विकल्पों में बहेगी; जब इस धारा में निरंतरता बनी रहेगी; तब यह ज्ञान में बहेगी, उपयोग में, परिणति में – इसप्रकार यह भेदज्ञान की धारा अविरल बहनी चाहिए; यही शुद्ध होने की विधि है। (क्रमशः)

से – शांतिलाल चौधरी, महाचंद सेठी, ज्ञानमल पाटोदी, **ग्वालियर से –** श्यामलाल विजयवर्गीय, **बीना से –** कमलकुमार जैन, अमितभाई मेहता, **पीसांगन से –** रखबचन्द नेमीचन्द पहाड़िया, **हिम्मतनगर से –** मीठालाल मगनलाल दोशी, **रखियाल से –** **से –** नेमिचन्द आमलियावाले इत्यादि भी उपस्थित रहेंगे।

ऐसे मांगलिक अवसर पर सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पधारक

मांगलि

शिविर के आमन्त्रणकर्त्ता

श्रीमान भबूतमल चम्पालाल भण्डारी, बैंगलोर

विशिष्ट कार्यक्रम

झण्डारोहण एवं शिविर उद्घाटन समारोह

रविवार, दिनांक 4 अगस्त, 2002 प्रात: 8.00 बजे

उद्घाटनकर्त्ता : श्रीमान प्रेमचन्दजी बजाज कोटा

झण्डारोहणकर्त्ता : श्रीमान चौधरी प्रदीपकुमारजी जैन किशनगढ़

विशिष्ट अतिथि : श्री कैलाशराव रणदिवे, मुम्बई

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट का अधिवेशन

रविवार, दिनांक 11 अगस्त, 2002

प्र
5
5
6
7
8
1

ट्रस्ट के परम संरक्षक : स्व. श्री रामजी

ट्रस्ट के सं

श्रीमती शारदाबेन शांतिलाल शाह, मुंबई
श्रीमती निरुपमाबेन कुमुदचन्द्रजी सुतरिया, मुंबई
श्री रमेशचंद मंगलजी मेहता, मुंबई
श्री बल्लूभाई चुन्नीलाल शाह, देवलाली
श्रीमती मंजुलाबेन कविनभाई परीख, मुंबई
श्रीमती झंकारीबाई खेमराजजी बाफना, खैरागढ़
श्री नेमीचंदजी पहाड़िया, पीसागन
श्री भगवानजी भाई कचराभाई शाह, लंदन
श्री नेमिचंदजी आमलियावाले, गुना
श्री जगदीशभाई चिमनलालजी मोदी, मुंबई
श्री भबूतमल चंपालालजी भण्डारी, बैंगलोर
श्री हसमुखभाई पोपटलालजी वोरा, मुंबई
श्री रायचंदभाई डी. शाह, मुंबई
स्व. श्री तखतराजजी जैन, कलकत्ता
श्री दिनेशकुमारजी पांडे, मुंबई
श्री जसवंतलाल छोटेलालजी मेहता, फतेपुर
श्री मीठालाल मगनलालजी
श्री ताराचंद मफतलाल गांधी
श्री भूपतभाई केवलचंदजी ज
श्री पंकजभाई वीसरिया, गों
श्री गम्भीरमलजी जैन, कोटा
श्री राजमलजी पाटनी, कलक
श्री शांतिभाई भायाणी परिवा
श्री छगनलालजी भण्डारी, च

शिविर के परम सहायक – सर्वश्री अनंतराय ए. सेठ मुम्बई, कविनभाई परीख, उम्मेदमल बड़जात्या मुम्बई, पूनमचन्द लुहाड़िया मुम्बई, दिल

शिविर के सहायक – सर्वश्री अनिल ए. कामदार मुम्बई, हीरालाल रायचन्द गांधी मुम्बई, मनोजभाई एवं अश्विनभाई मलाड मुम्बई, शारदाबेन मुम्बई, धन्यकुमार बेलोकर गजपंथा, माणकलाल आर. गांधी मुम्बई, महेन्द्रभाई एम. भालाणी मुम्बई, इंद्रमल एस. जैन मुम्बई, चन्द्रकान्त के. जवेरी चुन्नीलाल रायचन्द फतेपुर, मधुकान्ताबेन प्रवीणचन्द्र शाह देवलाली, हरकचन्द बिलाला अकोला, ऋषभकुमार बड़कुल विदिशा, डॉ. अरविन्दभाई

कार्यक्रम स्थल एवं सम्पर्क सूत्र : श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302

बाबू जुगलकिशोर 'युगल'
अध्यक्ष, श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई

नेमीचन्द
महामंत्री, श्री टोडरमल दिगम्बर जै

ट्रस्टी – डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, श्री धन्यकुमारजी बेलोकर डासाला, श्री सुमनभाई दोशी मुम्बई, श्री शांतिलालजी जवेरी मुम्बई, श्री पूनमचन श्री भबूतमलजी भण्डारी बैंगलोर, श्री अमृतभाई मेहता फतेपुर, श्री नेमिचन्दजी पांड्या कलकत्ता, श्री आलोककुमारजी जैन कानपुर।

डॉ. अमृतलाल जैन, कमलचन्द जैन, **अहमदाबाद से –** गम्भीरमल जैन सेमारीवाले, हरीशचन्द जैन, कीर्तिभाई मेहता, ोगीलाल गांधी, **तलोद से –** ताराचन्द मफतलाल गांधी रसीकभाई मेहता, **सहारनपुर से –** अभिनन्दनप्रसाद जैन, **गुना**

र धर्मलाभ लेने हेतु हमारा वात्सल्यपूर्ण हार्दिक आमंत्रण है।

िक कार्यक्रम

दैनिक कार्यक्रम

ात:

.00 से 5.30	टेप प्रवचन : पूज्य गुरुदेवश्री
.30 से 6.15	प्रौढ़ कक्षा
.30 से 7.15	नित्य नियम पूजन एवं विधान
.30 से 8.00	सी.डी. प्रवचन पू. गुरुदेवश्री
.15 से 9.45	प्रवचन विशिष्ट विद्वानों द्वारा
0.00 से 11.00	कक्षायें

दोपहर –

1.30 से 2.00	छात्र प्रवचन
2.15 से 3.00	व्याख्यानमाला
3.15 से 4.15	कक्षायें
4.30 से 5.15	तत्त्वचर्चा

सायं –

6.30 से 7.15	कक्षाएँ
7.30 से 8.00	जिनेन्द्र भक्ति
8.00 से 9.30	प्रवचन (दो विद्वानों द्वारा)

ीभाई माणेकचन्द दोशी, सोनगढ़

रक्षक –

दोशी, हिम्मतनगर
ी, तलोद
वेरी, मुंबई
डल
ा
कत्ता
र, चैन्नई
चैन्नई

श्री मिश्रीलालजी काला, कलकत्ता
श्री प्रकाशचंदजी गजानंदजी पाटनी, गया
श्री चिमनलाल छोटालालजी शाह, अहमदाबाद
श्री बालचंदजी पाटनी, कलकत्ता
श्री अशोककुमारजी जैन कलकत्ता,
श्रीमती रेवाबेन टीम्बड़िया, राजकोट
श्री चंपालालजी भण्डारी, बैंगलोर
श्री विक्रमभाई कामदार, मुंबई

श्री चंदुभाई कामदार परिवार, राजकोट
श्री ज्ञानचंदजी जैन, कोटा
श्री दिलीपभाई वेलजीभाई शाह, मुंबई
श्री मोतीचंदजी लुहाड़िया, जयपुर
श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी, किशनगढ़
श्री सौभागमलजी पाटनी, कलकत्ता
श्री आलोककुमारजी जैन, कानपुर
श्री नाथालाल वेणीचन्द शाह, मुम्बई
श्रीमती भारतीबेन कोठारी, मुम्बई

ीपभाई बी.शाह मुम्बई, निरुपमाबेन के. सुतरिया मुम्बई, आलोककुमार जैन कानपुर, चंपालाल भबूतमल भण्डारी बैंगलोर रतिलाल घिया राजकोट, डॉ. बसन्तीबेन वी. शाह मुम्बई, बसंतभाई एम. दोशी मुम्बई, सुमनभाई आर.दोशी मुम्बई, शांतिलाल सी. जवेरी मुम्बई, नितिनकुमार टी. शाह मुम्बई, शिरीषभाई एस. खारा मुम्बई, फूलचन्द चौधरी न्यू बॉम्बे, हिम्मतलाल हरिलाल शाह मुम्बई, मेहता दोशी गोंडल।

2 015 **फोन –** 0141-705581, 707458 **फैक्स –** 704127 **तार :** त्रिमूर्ति

पाटनी
न सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर

बसन्त एम. दोशी
महामंत्री, श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई

दजी लुहाड़िया दिल्ली, श्री अनंतभाई अमोलखचन्द सेठ मुम्बई, श्री जवाहरलालजी बड़कुल विदिशा, श्री हरकचन्दजी बिलाला अकोला,

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

वैराग्य समाचार

1. सायला- राजस्थान निवासी श्रीमान् तखतराजजी जैन कलकत्ता का दिनांक 21 मई 2002 को 86 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया है। बाबूजी तखतराजजी उन चंद सौभाग्यशालियों में से एक थे जिन्हें पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी का प्रत्यक्ष सान्निध्य वर्षों तक मिला। परिवार परम्परा से श्वेताम्बर सम्प्रदाय में जन्म होने के बावजूद भी आपने अपने आपको समाज और पारम्परिक धर्म से परिवर्तित किया। श्वेताम्बर समाज के घोर विरोध होने के बावजूद आपने श्री दिगम्बर जैन मंदिर सायला में गुरुदेव के कर-कमलों द्वारा प्रतिष्ठित भगवान ऋषभदेव की मूर्ति स्थापित करवायी। जो आज भी शुद्ध तेरापंथी आम्नाय अनुसार पूजित है।

आपको सोनगढ़ में श्री नंदीश्वरद्वीप की पंच-कल्याणक प्रतिष्ठा के समय भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य मिला था। तत्त्व प्रेम और तत्त्वप्रचार की उत्कृष्ट भावना आपके रोम-रोम में समायी हुई थी। एतदर्थ समय-समय पर शक्ति के अनुसार दान भी दिया करते थे। जयपुर में शिक्षित विद्यार्थियों के प्रति बहुत प्रमोद रखते थे। श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में संचालित गतिविधियों का लाभ लेने हेतु आपने यहाँ एक फ्लैट भी बनवाया, जिसका भरपूर लाभ भी लिया। आप विगत वर्ष तक जयपुर शिविर में आते रहे।

आपने जीवन के अंतिम क्षणों तक गुरुदेवश्री की वाणी को आत्मसात् करके रखा और शांत सरल भाव से महाप्रयाण किया।

आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा 501रुपये जैनपथप्रदर्शक समिति को प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

2. नवरंगपुरा-अहमदाबाद मुमुक्षु मण्डल के प्रमुख श्री प्रभाकरभाई हिम्मतलाल कामदार का दिनांक 29 मई 2002 को स्वाध्याय के समय जिनमंदिर में शांत परिणामोंपूर्वक स्वर्गवास हो गया है। आप सरलस्वभावी, अच्छे कार्यकर्ता एवं नियमित स्वाध्यायी थे। आप सदैव पूज्य गुरुदेवश्री की वाणी के प्रचार-प्रसार हेतु तत्पर रहते थे।

3. भारिल्ल बन्धुओं की मामीजी एवं भक्तामर मण्डल के अध्यक्ष पूनमचन्द सतभैया इन्दौर की पूज्य माताजी 90 वर्षीय श्रीमती सरस्वतीबाई बालचन्द सतभैया का दिनांक 4 जुलाई 2002 को निधन हो गया है। आप एक धर्मनिष्ठ महिला थी, आपकी पुण्यस्मृति में तीये के दिन **'विदाई की बेला'** एवं तेरहवें दिन **'इन भावों का फल क्या होगा'** वैराग्यवर्द्धक पुस्तकों का वितरण किया गया।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही निर्वाणपद की प्राप्ति करें - यही मंगल कामना है।

- प्रबन्ध सम्पादक

अवश्य नोट करें

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर के पुराने टेलीफोन नं. 515581, 515458, 514078 बदल गये हैं। इनके स्थान पर नये टेलीफोन नं. क्रमश: **705581, 707458** एवं **710078** हो गये हैं।

पाँचवीं बार पढ़ रही हूँ

वर्धा (महा.) से श्रीमती सुलोचना जैन लिखती हैं कि -

''पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित पुस्तक **विदाई की बेला** चार बार पढ़ने पर भी मन नहीं भरा अब पाँचवीं बार पढ़ रही हूँ।

श्री सदासुखी, विवेकी तथा खुशीराम जैसे पात्र आज भी हर घर में अपना दु:खी जीवन जी रहे हैं, सद्भाग्य से अकस्मात् पण्डितजी जैसा ज्ञानी पात्र मार्ग-दर्शक बनकर उनके विचारों को परिवर्तित कर देता है और देखते-देखते सदासुखी एवं विवेकी के जीवन का नक्शा ही बदल जाता है।

मन्दिर में अनेक वृद्धजन एवं भाई-बहिन प्रतिदिन स्वाध्याय के लिये उपस्थित रहते हैं, वहाँ भी **विदाई की बेला** का ही स्वाध्याय प्रारंभ किया है; अत: कृपया पत्र पाते ही 25 पुस्तकें भेज दें। आपकी पुस्तक का ही चमत्कार कहिये कि उन वृद्धजनों के विचारों में भारी परिवर्तन होता दिखाई दे रहा है।'

हार्दिक शुभ कामनायें !

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के मैनेजर पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, छतरपुर का दिनांक 24 जून 2002 को तथा वीतराग-विज्ञान (मासिक) एवं जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) के प्रबन्ध सम्पादक पण्डित अनुभवप्रकाशजी शास्त्री, जबलपुर का दिनांक 30 जून 2002 को विवाह सम्पन्न हुआ है। महाविद्यालय एवं ट्रस्ट परिवार की ओर से दोनों विद्वानों को सुदीर्घ उत्कृष्ट गृहस्थ जीवन जीने हेतु हार्दिक शुभ कामनायें ! **- प्रबन्ध सम्पादक**

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण अभी भी भेज सकते हैं

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के पास दशलक्षण पर्व के पावन अवसर पर प्रवचनकार विद्वान भेजने हेतु प्रतिवर्ष दिगम्बर जैनसमाज के सैंकड़ों पत्र प्राप्त होते हैं; पर हम सभी जगह विद्वान उपलब्ध नहीं करा पाते हैं। हमारे पास 10 जुलाई के पूर्व ही सैंकड़ों पत्र प्राप्त हो चुके हैं। अभी भी जिन मुमुक्षु मण्डलों ने आमंत्रण नहीं भेजा है वे 31 जुलाई 2002 तक अवश्य आमंत्रण भेज दें, इसके बाद प्राप्त होनेवाले आमंत्रणों हेतु व्यवस्था कर पाना कठिन होगा। पते में फोन व एस. टी. डी. कोड नम्बर लिखना न भूलें। **- मंत्री, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) **जुलाई (द्वितीय) 2002**
आई. आर. / R. J. **3002/02**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित अनुभवप्रकाश** जैनदर्शनाचार्य, एम.ए., बी.एड. एवं **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 705581, 707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 704127